नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भाषा का निर्माण समाज से होता है : असगर वज़ाहत

वर्धा, 21 नवंबर, 2016: हिंदी के जाने-माने कथाकर प्रो. असगर वज़ाहत ने कहा है कि भाषा का निर्माण समाज से होता है। पूर्वोत्तर के समाज से निर्मित भाषाएं रचनात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण है। प्रो. वज़ाहत पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग का हिंदी विभाग और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। ''पूर्वोत्तर भारत की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप'' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में प्रो. वज़ाहत ने कहा कि पूर्वोत्तर का साहित्य समृद्ध है। पूर्वोत्तर की भाषाओं के साथ हिंदी को साहित्यिक संबंध जोड़ना चाहिए। संगोष्ठी की अध्यक्षता पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. हेनरी लामिन ने की।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, हिंदी के

सुपरिचित कवि एवं लेखक प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि अनुवाद भाषाओं के बीच सेतु बंधन का काम करता है और पूर्वोत्तर की भाषाओं के विकास का काम भी करता है। प्रो. शर्मा ने पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के तहत अनुवाद प्रकोष्ठ की स्थापना का सुझाव दिया तथा संयुक्त कोशों के प्रकाशन की आवश्यकता पर बल दिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रो. लामिन ने उनके सुझाव पर विचार करने का भरोसा दिया। स्वागत भाषण में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. माधवेंद्र प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि पूर्वोत्तर की पहचान और शक्ति उसकी विविधता है। भूमण्डलीकरण ने इसकी विविधता के समक्ष कड़ी चुनौती खड़ी की है। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. दिनेश कुमार चौबे ने द्वि-दिवसीय संगोष्ठी की

रूपरेखा से अवगत कराया। उदघाटन सत्र का संचालन डॉ. भरत प्रसाद त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र ने प्रस्तुत किया।

उदघाटन में विद्यार्थियों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में पूर्वोत्तर के भाषा वैविध्य पर मणिपुर विवि की प्रो. सुबदनी देवी, राजीव गांधी विवि, ईटानगर के डॉ. ओकेल लेगो, त्रिपुरा विवि की डॉ. मिलन रानी जमातिया, नेहू के प्रो. शैलेंद्र कुमार सिंह ने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक रविभूषण ने की। 'पूर्वोत्तर की भाषा संस्कृति' पर हुए सत्र में डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी, डॉ. डेकिंनी, डॉ. सोनम वाड़मू, डॉ. बिक्रम थापा, डॉ. फिल्मिका मारबानियांग, विकिहो वित्सु, यांगी तागू और जया गोगोई ने आलेख पढ़े।

फोटो परिचय : संगोष्ठी के उदघाटन में संबोधित करते हुए प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, मंच पर प्रो. माधवेंद्र पाण्डेय, प्रो. हेनरी लामिन, प्रो. असगर वज़ाहत।